चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	13.11.2020	02	02-04

Hisar varsity develops high-protein sorghum

DEEPENDER DESWAL
TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, NOVEMBER 12

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) here has developed a new improved variety of sorghum CSV 44F. The variety is developed by the Forage section of the Department of Genetics and Plant Breeding of the university.

Dr AK Chabra, Head of the Department of Genetics and Plant Breeding, said the newly developed variety was notified and released by the 'Crop Standards, Notification and Approval Central Sub-Committee' of the Department of Agriculture and Co-operation of the Union Ministry of Agriculture and Farmers Welfare.

He said the variety was developed by the team of scientists namely Dr Pammi Kumari, Dr Satyawan Arya, Dr SK Pahuja, Dr NK Thakral and Dr DS Phogat, Dr Satpal, Dr Jayanthi Tokas, Dr Harish Kumar, Dr Vinod Malik and Dr Sarita Devi.

The variety is recommended for southern states, mainly Karnataka and Tamil Nadu. Vice-Chancellor of the University Professor Samar Singh congratulated the scientists for the achievement and called for continuous efforts in future as well adding that the variety has 10 per cent higher protein content, good in taste and also high digestibility than other varieties, due to which it is helpful in increasing milk production of animals.

The VC said the variety had no lodging problems and was most suitable in moderate to high rainfall areas. Naturally poisonous dhurin content is also very less in this variety and is moderate tolerant to stem borer and shoot fly. The average green fodder yield of the variety is 407 q/ha, which is 7.5 per cent and 5.8 per cent higher than other improved varieties of sorghum such as CSV 21F and CSV 30F, respectively.

The variety is recommended for southern states, mainly Karnataka and Tamil Nadu. FILE PHOTO

INCREASES MILK PRODUCTION IN ANIMALS

- The variety has 10 per cent higher protein content, good in taste and also high digestibility than other varieties, due to which it is helpful in increasing milk production of animals
- Naturally poisonous dhurin content is very less in this variety and is moderate tolerant to stem borer and shoot fly
- The variety also has no problem in lodging and is most suitable in moderate to high rainfall areas

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Hawk	**13.11.2020**	Online	--

Haryana Agri University Developed New Sorghum Variety CSV 44F Mainly For Southern States

Chandigarh (The Hawk): Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar has developed a new improved variety of sorghum CSV 44F.

This newly developed variety is recommended for the southern states mainly Karnataka, Maharashtra and Tamil Nadu. Vice Chancellor of the University, Professor Samar Singh congratulated the scientists for this achievement and called for continuous efforts in future as well. Director of Research, Dr. S.K. Sehrawat highlighted that the CSV 44F variety has 10 percent higher protein content, delicious and also high digestibility than other varieties, due to which it is helpful in increasing the milk production of the animal.

The variety has no lodging problems and most suitable in moderately to high rainfall areas. Naturally poisonous dhurin content is also very less in this variety and is moderate tolerant to stem borer and shoot fly. The average green fodder yield of this variety is 407 q/ha, which is 7.5 percent and 5.8 percent higher than other improved varieties of sorghum CSV 21F and CSV 30F, respectively. This variety has been developed by the Forage section, the Department of Genetics and Plant Breeding of the university. This variety notified and released by the 'Crop Standards, Notification and Approval Central Sub-Committee' of the Department of Agriculture and Co-operation, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India. According to Dr. A.K. Chabra, HOD, Genetics and Plant Breeding that this variety is developed by the team of scientists namely Dr. Pammi Kumari, Dr. Satyawan Arya, Dr. S.K. Pahuja, Dr. N.K. Thakral and Dr. D.S. Phogat, Dr. Satpal, Dr. Jayanthi Tokas, Dr. Harish Kumar, Dr. Vinod Malik and Dr. Sarita Devi. (JMT-INF).

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	13.11.2020	08	02-05

मधुमक्खी पालन अपनाकर खुद का स्वरोजगार स्थापित कर सकते युवा

सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी शिक्षण संस्थान में ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

जागरण संवाददाता, हिसार : बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं।

मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर व्यवसाय को बढ़ा सकते हैं। यह बातें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि (एचएयू) के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डा. अशोक गोदारा, सह निदेशक(प्रशिक्षण)ने व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डा. आरएस हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं।

प्रतीकात्मक तस्वीर। ● जागरण आर्काइव

मधुमक्खी पालन से यह प्रोडक्ट किए जा सकते हैं तैयार

मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते हैं, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। डा. तरुण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्टूबर-नवंबर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरूरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी है सहायक : कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डा. भूपेंद्र सिंह ने बताया कि मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी सहायक होती है। इस व्यवसाय को वे लोग भी शुरू कर सकते हैं, जिनके पास जमीन का अभाव है या फिर जमीन नहीं है। उन्होंने बताया कि सर्दी के मौसम में मधुमक्खी पालन अधिक मुनाफा देता है, क्योंकि इस समय फसल पर फूलों की संख्या बहुत अधिक होती है जो मधुमक्खी को शहद बनाने के लिए जरूरी होते हैं। उन्होने मधुमक्खियों की विभिन्न प्रजातियों के बारे में बताते हुए उनके जीवन चक्र और कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	13.11.2020	02	07-08

मधुमक्खी पालन कर स्वरोजगार स्थापित कर सकते हैं युवा : डॉ. गोदारा

हिसार, 12 नवम्बर (ब्यूरो): बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक (प्रशिक्षण) ने व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरूरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागी भाग ले रहें हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	**13.11.2020**	**02**	**07-08**

एचएयू में मधुमक्खी पालन पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

भास्कर न्यूज | हिसार

बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक(प्रशिक्षण) ने व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**13.11.2020**	——	--

एचएयू में मधुमक्खी पालन पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

प्रतिभागियों को संबोधित करते वक्ता।

हिसार, (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक ने कहा कि बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है। डॉ. तरुण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरुरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागी भाग ले रहें है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	**13.11.2020**	——	--

मधुमक्खी पालन कर स्वरोजगार स्थापित कर सकते हैं बेरोजगार युवा : डॉ. ए.के. गोदारा

एचएयू में मधुमक्खी पालन पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक(प्रशिक्षण)ने व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है।

प्रतिभागियों को संबोधित करते वक्ता।

परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी है सहायक

कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी सहायक होती है। इस व्यवसाय को वे लोग भी शुरू कर सकते हैं, जिनके पास जमीन का अभाव है या फिर जमीन नहीं है। उन्होंने बताया कि सर्दी के मौसम में मधुमक्खी पालन अधिक मुनाफा देता है क्योंकि इस समय फसल पर फूलों की संख्या बहुत अधिक होती है जो मधुमक्खी को शहद बनाने के लिए जरूरी होते हैं।

उन्होने मधुमक्खियों की विभिन्न प्रजातियों के बारे में बताते हुए उनके जीवन चक्र और कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते है, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। डॉ. तरुण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरुरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागी भाग ले रहें है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**12.11.2020**	——	--

एचएयू में मधुमक्खी पालन पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

मधुमक्खी पालन कर स्वरोजगार स्थापित कर सकते हैं बेरोजगार युवा : डॉ. गोदारा

पांच बजे न्यूज

हिसार। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक(प्रशिक्षण)ने व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है।

परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी है सहायक

कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी सहायक होती है। इस व्यवसाय को वे लोग भी शुरू कर सकते हैं, जिनके पास जमीन का अभाव है या फिर जमीन नहीं है। उन्होंने बताया कि सर्दी के मौसम में मधुमक्खी पालन अधिक मुनाफा देता है क्योंकि इस समय फसल पर फूलों की संख्या बहुत अधिक होती है जो मधुमक्खी को शहद बनाने के लिए जरूरी होते हैं। उन्होने मधुमक्खियों की विभिन्न प्रजातियों के बारे में बताते हुए उनके जीवन चक्र और कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते है, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। डॉ. तरुण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरुरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागी भाग ले रहें है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**12.11.2020**	——	--

मधुमक्खी पालन कर स्वरोजगार स्थापित कर सकते हैं युवा : डॉ. गोदारा

एचएयू में मधुमक्खी पालन पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक(प्रशिक्षण)ने व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है।

परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी है सहायक

कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी सहायक होती है। इस व्यवसाय को वे लोग भी शुरू कर सकते हैं, जिनके पास जमीन का अभाव है या फिर जमीन नहीं है। उन्होंने बताया कि सर्दी के मौसम में मधुमक्खी पालन अधिक मुनाफा देता है क्योंकि इस समय फसल पर फूलों की संख्या बहुत अधिक होती है जो मधुमक्खी को शहद बनाने के लिए जरूरी होते हैं।

उन्होने मधुमक्खियों की विभिन्न प्रजातियों के बारे में बताते हुए उनके जीवन चक्र और कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते है, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है।

डॉ. तरुण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरुरी उपकरणों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागी भाग ले रहें है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	**12.11.2020**	——	--

मधुमक्खी पालन कर स्वरोज़गार स्थापित कर सकते हैं बेरोज़गार युवा : डा. एके गोदारा

हिसार, 12 नवम्बर (राज पराशर) : बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक (प्रशिक्षण) ने व्यक्त किए। वे संस्थान की ओर से मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से वे लघु स्तर पर मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करके अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं।

एचएयू में मधुमक्खी पालन का ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी है सहायक : कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डा. भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी सहायक होती है। इस व्यवसाय को वे लोग भी शुरू कर सकते हैं, जिनके पास जमीन का अभाव है या फिर जमीन नहीं है। उन्होंने बताया कि सर्दी के मौसम में मधुमक्खी पालन अधिक मुनाफा देता है, क्योंकि इस समय फसल पर फूलों की संख्या बहुत अधिक होती है जो मधुमक्खी को शहद बनाने के लिए जरूरी होते हैं। उन्होंने मधुमक्खियों की विभिन्न प्रजातियों के बारे में बताते हुए उनके जीवन चक्र और कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते हैं, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**12.11.2020**	——	--

एचएयू में मधुमक्खी पालन पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक(प्रशिक्षण)ने व्यक्त किए। वे मधुमक्खी पालन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी सहायक होती है। इस व्यवसाय को वे लोग भी शुरू कर सकते हैं, जिनके पास जमीन का अभाव है या फिर जमीन नहीं है। उन्होंने बताया कि सर्दी के मौसम में मधुमक्खी पालन अधिक मुनाफा देता है क्योंकि इस समय फसल पर फूलों की संख्या बहुत अधिक होती है जो मधुमक्खी को शहद बनाने के लिए जरूरी होते हैं। डॉ. तरुण वर्मा ने बताया कि मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए अक्तूबर-नवम्बर का महीना सबसे सही समय है। उन्होंने प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन के लिए जरुरी उपकरणों के बारे में भी जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों सहित अन्य प्रदेशों के 40 प्रतिभागी भाग ले रहें है।